मूल्य: १०.०० रुपया

तित्थयर

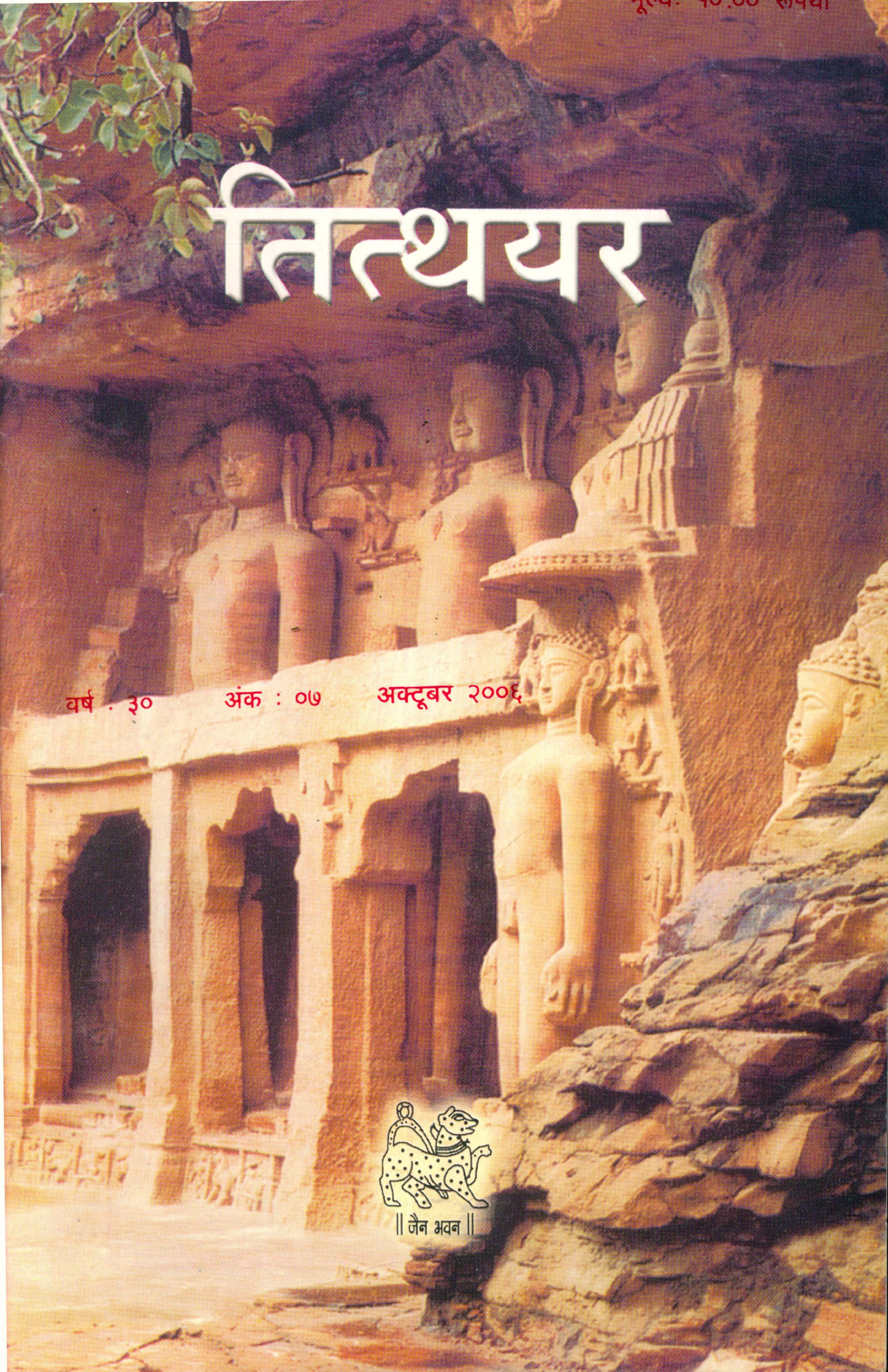

वर्ष : ३०   अंक : ०७   अक्टूबर २००६

॥ जैन भवन ॥

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३० अंक - ०७, अक्टूबर २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता – Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	क्या तत्त्वार्थसूत्र स्त्रीमुक्ति का-निषेध करता है?	प्रो. सागरमल जैन	३१७
२.	योगशतक	डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी	३२५
३.	सुवर्णभूमि में कालकाचार्य	डॉ. उमाकान्त शाह	३३१
४.	सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**)	आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.	३३९

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

क्या तत्त्वार्थसूत्र स्त्रीमुक्ति का निषेध करता है?

प्रो. सागरमल जैन

'तत्त्वार्थसूत्र निकष' नामक कृति में प्रो. रतनचन्द्रजी जैन का "तत्त्वार्थसूत्र में स्त्रीमुक्ति निषेध" नामक आलेख प्रकाशित हुआ है। इस आलेख में उन्होंने तत्त्वार्थसूत्र के सातवें एवं नवें अध्यायों के दो सूत्रों को आधार बनाकर अपने मत की पुष्टि करने का प्रयत्न किया है। यहाँ हम यह विचार करेंगे कि उनके ये तर्क कितने समीचीन है?

सर्वप्रथम उन्होंने तत्त्वार्थसूत्र के नौवें अध्याय के बादरसम्परायसर्वे (९/१२) नामक सूत्र को आधार बनाकर यह कहा है कि नौवें गुणस्थान के संवेदभाग पर्यन्त श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार भी सभी बाईस परिषह होते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि नाग्न्य परिषह भी नौवे गुणस्थान तक होता है। चूंकि स्त्री नग्न नहीं हो सकती है, इसलिए उसे नाग्न्य परिषह भी नहीं होता है। नाग्न्य परिषह के अभाव में स्त्री नौवें गुणस्थान तक भी नहीं पहुँच सकती है। अतः यह सूत्र स्त्री की मुक्ति का विरोधी है, क्योंकि मुक्ति तो १४वें गुणस्थान पर पहुँचने पर होती है।

इस संबंध में प्रो. रतनचन्द्र जैन का अर्थ घटन सम्यक् नहीं है। क्या उनके मंतव्य का आशय यह है कि परिषहों के सद्भाव में ही मुक्ति सम्भव है। दिगम्बर मान्यता के अनुसार केवली को भी क्षुधा परिषह एवं पीपासा परिषह नहीं होता है अतः वह भी मुक्त नहीं होगा। साथ ही यहाँ वे जिस नौवे गुणस्थान की कल्पना कर रहे है, वह भी उचित नहीं है, क्योंकि तत्त्वार्थसूत्र और उसके स्वोपज्ञभाष्य के काल तक गुणस्थान की अवधारणा का विकास ही नहीं हुआ था, उन दोनों ग्रन्थों में कहीं भी 'गुणस्थान' शब्द नहीं मिलता है। श्वेताम्बर आगमों की देवर्द्धिगणि की, वल्लभी की ई. सन् की पाँचवीं शती की, जो वाचना है, वहाँ तक भी अर्धमागधी आगमों में कहीं गुणस्थान शब्द का प्रयोग ही नहीं हुआ है। समवायांग में जिन चौदह जीवस्थानों का उल्लेख है वह भी परवर्ती प्रक्षेप है। वस्तुतः गुणस्थान का उल्लेख ५वीं शती से पूर्व

का नहीं है। यहाँ इस सम्बन्ध में अधिक विस्तार में जाना सम्भव नहीं है। गुणस्थानों की अवधारणा का विकास परवर्ती काल की घटना है। इस सम्बन्ध में मेरी पुस्तक 'गुणस्थान सिद्धान्त एक विश्लेषण' में विस्तृत चर्चा की गई है, पाठक उसे वहाँ देखे।

यहाँ 'बादरसम्परायसर्वे' का अर्थ इतना ही है कि जब तक स्थूल रूप से कषायों का उदय रहा हुआ है तब तक सभी परिषहों की सम्भावना है। कषायों के क्षय या उपशम का शरीर रचना से कोई सम्बन्ध नहीं है। कषाय मनोवृत्ति है और मनोवृत्ति पर विजय पाने में शरीर बाधक नहीं है। जब पुरुष शरीर में पुरुष वेद आदि नोकषाय समाप्त हो सकते है, तो फिर स्त्री शरीर में वेद आदि नोकषाय क्यों समाप्त नहीं हो सकते है?

तत्त्वार्थ सूत्र के ही नौवें अध्याय के ग्यारहवें सूत्र में 'एकादश जिने' नामक सूत्र में जिन के भी ग्यारह परिषह माने गये है। यह मूल सूत्र सर्वार्थसिद्धि के पाठ में भी है। परिषहों की उपस्थिति या अनुपस्थिति कहीं भी मुक्ति में साधक या बाधक नहीं है। पुनः वे परिषह शब्द का जो अर्थघटन कर रहे है वह भी सम्यक् नहीं है, क्योंकि परिषह वह है जो साधना के क्षेत्र में उपस्थित हो जाता है, परिषह जीवनचर्या में सहज उपस्थित होने वाली घटना है, उसका गृहस्थ और मुनि से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। परिषह गृहस्थ को भी हो सकता है। क्षुधा परिषह, नागन्य परिषह आदि अनेक परिषह गरीब व्यक्ति भी सहन करते है। पशुओं को नागन्य परिषह होता है क्या उनकी मुक्ति होगी? यदि वे ऐसा मानते है कि स्त्री की नाग्न्य परिषह नहीं होता इसलिए वह मुक्त नहीं होती तो क्या वे यह मानने को भी सहमत है कि दिगम्बर मुनि को भी कभी क्षुधा और पीपासा परिषह होते है और कभी नहीं भी होते है, क्यों कि दिगम्बर मुनि भी आहार करता है, जल पीता है, यदि आहार करने वाले को भी क्षुधा और पीपासा परिषह संभव हो सकते है, तो वस्त्रधारी को भी वस्त्र की अल्पता अथवा कभी अनुपलब्धि होने पर नाग्न्य परिषह भी हो सकता है। यदि आहार करते हुए कैवल्य की प्राप्ति होती है, कैवल्य प्राप्ति में आहारक दशा बाधक नहीं है तो फिर वस्त्र कैवल्य में कैसे बाधक हो सकता है।

पुनः परिषह का कैवल्य से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है, क्या जो आहार करेगा उसे कैवल्य की प्राप्ति नहीं होगी? ऐसी स्थिति में तो दिगम्बर मुनि को भी कैवल्य की प्राप्ति असंभव हो जावेगी और कैवल्य की प्राप्ति नहीं होगी तो फिर मुक्ति भी नहीं होगी। सत्य यह है कि मुक्ति का परिषह के सद्भाव या अभाव से कोई सीधा सम्बन्ध ही नहीं है।

मेरा, भाई रतनचंद्रजी से पहला प्रश्न यह है कि आध्यात्मिक विकास या मुक्ति परिषह के सद्भाव में संभव है या परिषह के अभाव में संभव है? यदि वे प्रथम विकल्प माने कि मुक्ति परिषह के सद्भाव में ही संभव है तो फिर यह बात भी मानना होगा कि नग्नत्व परिषह और स्त्री परिषह के सद्भाव में ही मुक्ति होगी, किन्तु तत्त्वार्थसूत्र में नग्नत्व और स्त्री परिषह दोनों ही चारित्रमोह के कारण माने गये है और चारित्रमोह दसवेगुणस्थान तक ही होता है, अतः यह मानना होगा कि ग्यारहवें से लेकर चौदहवें गुणस्थान में नाग्न्य और स्त्री परिषह का अभाव होता है और इनके अभाव में ही आत्मा मुक्ति होती है। अतः यदि साध्वी को नाग्न्य परिषह नहीं होता है, तो उससे उसकी मुक्ति में कोई बाधा नहीं आएगी, क्योंकि सिद्धान्त यह कहता है कि चारित्र मोहजन्य नाग्न्य परिषह के अभाव में ही मुक्ति होगी, सद्भाव में नहीं। अतः तत्त्वार्थसूत्र का नौवे अध्याय का पन्द्रहवाँ सूत्र "चारित्रमोहे नाग्न्यारतिस्त्रीषिद्याक्रोशयाचना सत्कार पुस्कारा:" यह स्पष्ट कर देता है कि नाग्न्य परिषह का अभाव स्त्री मुक्ति का विरोधी नहीं है।

पुनः यदि वे दूसरा विकल्प सत्य मानते है कि परिषह के अभाव में ही मुक्ति होती है तो उनके अनुसार भी स्त्री में नाग्न्य परिषह का अभाव ही है, अतः वह मुक्त हो सकती है फलतः तत्त्वार्थसूत्र किसी भी स्थिति में स्त्रीमुक्ति का विरोधी नहीं है वस्तुतः परिषहों का सद्भाव या अभाव मुक्ति का हेतु ही नहीं है परिषहों के सद्भाव में भी मुक्ति संभव है और परिषहों के अभाव में भी मुक्ति संभव है। क्यों कि तत्त्वार्थसूत्र के सर्वार्थसिद्धि मान्य दिगम्बर पाठ में और तत्त्वार्थभाष्य मान्य श्वेताम्बर पाठ में 'एकादशे जिने' पाठ तो समान ही है। जिसका स्पष्ट अर्थ तो यही है कि जिनमें बाईस में से वेदनीय जन्य ग्यारह परिषह होते है और ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहनीय और

अन्तराय जन्य ग्यारह परिषह नहीं होते है। वेदनीय आदि अधाती कर्म जन्य परिषहों का सद्भाव मुक्ति में बाधक नहीं है और मोहनीय आदि घाती कर्मजन्य परिषह का सद्भाव मुक्ति बाधक है। तत्त्वार्थसूत्र में नाग्न्य और स्त्री परिषह का सम्बन्ध चारित्र मोह से है, वहाँ चारित्रमोह का सम्बन्ध वस्त्र की उपलब्धि या अनुपलब्धि से नहीं है अपितु वस्त्र के प्रति आसक्ति से है। लज्जा के भाव से है, साथ ही स्त्री परिषह का मतलब स्त्री की उपस्थिति या अनुपस्थिति से नहीं है अपितु कामवासना से है। यह सत्य है कि वस्त्रासक्ति एव लोकलज्जा का भाव वस्त्र की उपस्थिति में भी हो सकता है और उसके अभाव में भी हो सकता है। इसी प्रकार वस्त्रासक्ति या लज्जा भाव का त्याग भी वस्त्र की उपस्थिति और अनुपस्थिति दोनों में सम्भव है, जैसे आधुनिक काल में वस्त्र पहनने के जो तरीके है, वहाँ वस्त्र के होते हुए भी लज्जा का भाव नहीं होता है। अतः 'बादरसम्परायसर्वे' सूत्र स्त्री मुक्ति में बाधक नहीं है।

आदरणीय भाई रतनचंद्रजी जैन ने तत्त्वार्थसूत्र में स्त्री मुक्ति निषेध के सम्बन्ध में जो सातवें अध्याय का सूत्र प्रस्तुत किया है वह है– शुक्लेचाद्येः पूर्वविदः वे लिखते है। कि 'तत्त्वार्थसूत्रकार' ने इस सूत्र के द्वारा भी स्त्री मुक्ति का निषेध किया है, क्योंकि सूत्र में कहा गया है कि चार प्रकार के शुक्ल ध्यानों में से प्रथम दो ध्यान पृथक्त्व-वितर्क विचार और एकत्व वितर्क अविचार, पूर्वविद् अर्थात् चतुर्दश पूर्वों के ज्ञाता श्रुतकेवली को होते है और दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों के अनुसार स्त्री को ११ अंगों का ज्ञान ही हो सकता है भले ही वह आर्यिका हो। इससे स्पष्ट है कि उसे चतुर्दश पूर्वों का ज्ञान नहीं हो सकता। फलस्वरूप उसको शुक्लध्यान के आदि के दो ध्यान भी नहीं हो सकते और उनके अभाव में उसे केवलज्ञान होना असंभव है।

उनके इस तर्क का आधार यह है कि "चतुर्दश पूर्वों के ज्ञान के बिना शुक्ल ध्यान के प्रथम दो भेद भी संभव नहीं है, चूंकि स्त्री दृष्टिवाद का अध्ययन नहीं कर सकती अतः उसमें दृष्टिवाद के ज्ञान का अभाव है इसलिए वह पूर्वविद् भी नहीं है। पूर्वों के ज्ञान का अभाव होने से उसमें शुक्लध्यान के प्रथम दो चरण नहीं होगे और शुक्लध्यान के अभाव में केवलज्ञान भी संभव

नहीं है और केवलज्ञान के अभाव में उसकी मुक्ति भी संभव नहीं है।"

प्रथम तो यह कि उन्होंने इसमें तत्त्वार्थसूत्र का सन्दर्भ देते हुए जो सातवें अध्याय के ३७वें सूत्र का उल्लेख किया है वह भी तर्कसंगत नहीं है। प्रथम तो भाष्यमान पाठ में सूत्र का प्रथम अंश 'शुक्ले चाद्ये' इतना ही मिलता है 'पूर्वविदः' यह भिन्न सूत्र है। भाष्यमान मूलपाठ के अनुसार शुक्लध्यान के प्रथम दो चरण पूर्ण होने पर उपशान्त कषाय अथवा क्षीण कषाय अवस्था की प्राप्ति होती है। यहाँ इस सूत्र में शुक्लध्यान के प्रथम दो चरणों का संबंध कषाय की उपशमता या क्षीणता से है न कि पूर्वविद होने से। यद्यपि अगला सूत्र पूर्वविद् है किन्तु वह विकल्प रूप ही है कि शुक्लध्यान के दो चरण को प्राप्त व्यक्ति 'पूर्वविद्' भी हो सकता है अथवा नहीं भी। इस प्रकार इस सूत्र में शुक्लध्यान के लिए पूर्वविद् होना यह आवश्यक नहीं है, किन्तु उपशान्त कषाय या क्षीण कषाय होना आवश्यक है। अतः उनका यह तर्क की स्त्री पूर्वविद् नहीं होती हैं, अतः वह मुक्त नहीं हो सकती है, समुचित नहीं है। मुक्त होने के लिए मात्र 'क्षीण कषाय' होना आवश्यक है न कि पूर्वो का ज्ञान।

पुनः स्त्री पूर्वविद् नहीं होती है, ऐसा एकांत निषेध भी श्वेताम्बर मान्य मूल आगमों में तो मुझे कहीं देखने को नहीं मिला। स्त्री के लिए दृष्टिवाद के अध्ययन का निषेध भी परवर्ती आचार्यों के द्वारा ही कल्पित किया गया है। परवर्ती आचार्यों ने तो श्रावक को भी आगम अध्ययन का अधिकारी नहीं माना है, किन्तु प्राचीन स्थिति ऐसी नहीं रही है।

पुनः पूर्वविद् होना यह मुक्ति की अनिवार्य शर्त नहीं है। जैन आचार्यों ने यह माना है कि नौ पूर्वो तक का ज्ञाता भी मिथ्यादृष्टि और अभव्य भी हो सकता है ऐसी स्थिति में 'पूर्व ज्ञान' मुक्ति की अनिवार्य शर्त नहीं है। इस सम्बन्ध में तत्त्वार्थसूत्रनिकष नामक इसी कृति में विद्वत्वर्य मुनि प्रमाणसागरजी म. द्वारा प्रस्तुत दिगम्बर परम्परा के बहुश्रुत विद्वान एवं चारित्र चूडामणि आचार्यप्रवर विद्यासागरजी म. का निम्न मन्तव्य दृष्टव्य है, वे लिखते है—आचार्य महाराज इस सूत्र का बहुत अच्छा अर्थ करते है— शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः इस सूत्र में च शब्द है, इसके दो अर्थ निकलते है—पहला अर्थ तो यह है कि

शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः से शुक्ले चाद्ये अपूर्वविदः अर्थ भी निकालना चाहिए, क्योंकि निर्ग्रन्थ का जघन्य श्रुत जो है वह अष्टप्रवचन मातृका बताया गया है। जो इस बात का परिचायक है कि कदाचित् जो पूर्वविद नहीं है, जैसे शिवभूति महाराज थे, वे अल्पज्ञानी होकर के भी भावश्रुत केवलित्व को प्राप्त कर सके थे। – इस प्रकार भाई रतनचंद्रजी के गुरुवर्य परमपूज्य आचार्य श्री के मन्तव्य से ही यह सिद्ध हो जाता है कि मुक्ति के लिए पूर्वाविद् होना आवश्यक नहीं है। ऐसी स्थिति में यह सूत्र स्त्री मुक्ति का निषेधक सिद्ध नहीं होता है।

अपने पक्ष के बचाव में प्रो. रतनचंद्रजी यह लिखते है कि "यदि क्षपक श्रेणी का विशिष्ट परिणाम होने पर श्रुत ज्ञानावरण के विशिष्ट क्षयोपशम से स्त्री को शाब्दिक ज्ञान हुए बिना द्वादशांग का अर्थबोध हो जाता है, तो पुरुष के लिए द्वादशांग के अध्ययन की अनिवार्यता असिद्ध हो जाती है।" –इसका उत्तर भी आचार्य श्री पूर्वोक्त मन्तव्य से ही मिल जाता है। शब्दशः द्वादशांग का अध्ययन मुक्ति के लिए कभी आवश्यक नहीं रहा है। गजसुकमाल मुनि का कथानक दोनों परम्पराओं में मान्य है, उन्होंने जिस दिन पूर्वाह्न में दीक्षा ली उसी दिन अपराह्न में ध्यान साधना हेतु वे श्मशान में चले गए और उसी रात्रि में कैवल्य को प्राप्त कर मुक्त हो गए। उन्होंने कब द्वादशांग का अध्ययन किया होगा? अतः श्वेताम्बर–दिगम्बर किसी भी परम्परा में यह, मान्यता नहीं रही है कि मुक्ति के लिए द्वादशांग का अध्ययन आवश्यक है। सभी कषायों एवं कर्मों का पूर्णतः क्षय–यही मुक्ति की अनिवार्य शर्त है, जिसे उमास्वाति ने तत्त्वार्थसूत्र में भी प्रतिपादित किया है।

पुनः अपने मत की पुष्टि हेतु भाई रतनचंद्रजी लिखते है कि "दूसरी बात यह है कि १४ पूर्वों के (शाब्दिक) अध्ययन के बिना उनका अर्थबोध उन्हीं ऋषियों को होता है जिन्हें प्रज्ञाश्रमणत्वऋद्धि (लब्धि) प्राप्त हो जाती है। किन्तु दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों आम्नायों के आगमों में स्त्रियों को सभी प्रकार की लब्धियों का निषेध किया गया है। आदरणीय भाई रतनचन्द्रजी का यह कथन भी प्रमाण पुरस्सर नहीं है। प्रथमतः इस सम्बन्ध में उन्होंने किसी आगम या आगमतुल्य ग्रन्थ का प्रमाण ही नहीं दिया है। जहाँ तक मेरी

जानकारी है श्वेताम्बर मान्य अर्धमागधी आगमों में एवं दिगम्बर परम्परा में मान्य आगमतुल्य ग्रन्थों यथा कसायपाहुड़, छक्कखण्डागम, मूलाचार, भगवती-आराधना आदि में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं है कि 'स्त्रियों को किसी भी प्रकार की लब्धि नहीं होती है।' तिलोयपण्णत्ति में मात्र यह कहा गया है कि "श्रुतज्ञानावरण और वीर्यान्तराय के उत्कृष्ट क्षय या उपशम से प्रज्ञाश्रमणत्व ऋद्धि उत्पन्न होती है, जिससे वह चौदह पूर्वों के विषयों को, सर्व श्रुत और उनके अध्ययनों को जान लेता है।" (४/१०/१७-१८) किन्तु इससे यह तो सिद्ध नहीं होता है कि स्त्रियों को प्रज्ञाश्रमण ऋद्धि नहीं होती है। जिस श्वेताम्बर 'प्रवचनसारोद्धार' ग्रन्थ का सन्दर्भ दिया है, वह आगम ग्रन्थ नहीं है दूसरे वह पर्याप्त परवर्ती (१३-१४वीं शती) काल का ग्रन्थ है। पुनः उसमें भी भव्य स्त्रियों के लिये जिन लब्धियों को निषेध किया है, वे है – अरिहंत, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, संभिन्नश्रोतृत्व, चारणलब्धि, चौदहपूर्वीत्व, गणधर, पुलाक और आहारक। पुनः प्रथमतः श्वेताम्बर परम्परानुसार इन लब्धियों का भी एकान्त निषेध नहीं माना गया है। यहाँ अपवाद सम्भव माने गये है। अन्यथा उनके ही आगम ज्ञाताधर्मकथा में वर्णित मल्ली का तीर्थंकर होना खण्डित हो जावेगा। अतः प्रवचनसारोद्धार में जो निषेध है, वह भी एकान्त निषेध नहीं है। साथ ही प्रवचन सारोद्धार की जिस गाथा (१५०६) का सन्दर्भ उन्होंने दिया है, वह गाथा भी स्त्रियों में न तो प्रज्ञाश्रमणत्व लब्धि का निषेध करती है और न वादलब्धि का (जिसका उल्लेख प्रो. रतनचन्द्रजी ने अपने इसी लेख के अग्रिम भाग में किया है।) प्रवचनसारोद्धार में जिन अट्ठावीस लब्धियों का उल्लेख है, उनमें से स्त्रियों के सम्बन्ध में मात्र उपरोक्त दस लब्धियों का ही निषेध है, शेष का निषेध नहीं है। अतः प्रो. रतनचन्द्रजी किस आधार पर यह कहते है कि स्त्री में प्रज्ञाश्रमणत्वलब्धि का निषेध है। प्रवचनसारोद्धार में यह स्पष्ट लिखा गया है कि भव्य स्त्रियों में दस लब्धियों को छोड़कर शेष लब्धियाँ होती है।

अपने लेख के अग्रिम भाग में उन्होंने एक आधार यह बताया है कि तत्त्वार्थसूत्र में अणगार धर्म के अन्तर्गत केवल पुरुषोचितव्रतनियमों का ही कथन किया गया है वहाँ स्त्रियों के उचित व्रत नियमों का भूल से भी नाम नहीं लिया गया है। इसके उत्तर में मेरा निवेदन यह है कि तत्त्वार्थसूत्र में कहीं भी श्राविका शब्द

का उल्लेख नहीं मिलता है क्या इस आधार पर वह यह मान लेंगे कि तत्त्वार्थसूत्र श्राविका के व्रतधारी होने का निषेध करता है? क्या उसमें अणुव्रत आदि भी सम्भव नहीं है? आगमों में अथवा मूलाचार आदि में साध्वियों के लिए केवल उन्हीं बातों का अलग से उल्लेख किया गया है जो साधुओं की अपेक्षा भिन्न थी। समान बातों के बारे में कुछ प्रसंगों को छोड़कर भिक्षु और भिक्षुणी दोनों शब्दों का उल्लेख नहीं है, मात्र भिक्षु का ही उल्लेख है। उमास्वाति ने तत्त्वार्थसूत्र में श्रावक के व्रतों एवं अतिचारों का उल्लेख करते हुए कहीं भी स्त्री के लिए अलग से उल्लेख नहीं किया है। उसमें उल्लेखित स्वपत्नी सन्तोष व्रत केवल पुरुषों के लिए है, तो फिर स्त्री के लिए स्वपतिसन्तोष का उल्लेख क्यों नहीं है? फिर तो यह कहना पड़ेगा कि तत्त्वार्थसूत्र श्राविका के अणुव्रती होने का भी निषेध करता है। भाष्य, आचारचूला आदि व्याख्याग्रन्थ है, अतः उनमें स्पष्टता के लिए भिक्षुणी आदि शब्दों का उल्लेख हुआ है। भाष्य में तो सिद्धों के भेद में स्त्री मुक्ति का भी उल्लेख है।

चूंकि दिगम्बर विद्वान जब भाष्य को स्वोपज्ञ ही नहीं मानते है तो फिर उसका आधार लेकर स्वमत की पुष्टि का प्रयत्न क्यों करते हैं। मूलाचार में तो स्पष्ट रूप से मुनि एवं आर्यिका की मुक्ति (सिद्धि) का उल्लेख है। वहाँ दिगम्बर विद्वान मुनि के लिए तो तद्भव मुक्ति स्वीकार करते हैं किन्तु जब आर्यिका का प्रश्न आता है तो वह भवान्तर में मुक्त होगी ऐसा अर्थ क्यों करते है? मूलाचार, षट्खण्डागम आदि दिगम्बर परम्परा को मान्य ग्रन्थों में जब स्त्री मुक्ति फलित हो रही है, तो फिर वे स्त्री-मुक्ति का निषेध किस आधार पर करते है? यदि हम तत्त्वार्थसूत्र के मूल सूत्रों के मात्र शाब्दिक अर्थों को ग्रहण करे तो उसमें न तो स्त्री और पुरुष के भेद से मुक्ति की कोई चर्चा है और न ही स्त्री मुक्ति का निषेध ही है। 'तत्त्वार्थसूत्र में स्त्री मुक्ति का निषेध' ऐसा प्रतिपादन केवल स्वैर कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

योगशतक

प्रस्तावना– डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी

पहले हमने संक्षेप में देखा कि आध्यात्मिक साधना के भिन्न-भिन्न मार्ग तप, योग, संवर संयम अथवा ध्यान-समाधि जैसे नामों से पहचाने जाते थे, उन नामों से उनका व्यवहार भी होता था तथा एक दूसरे से वे प्रभावित भी होते थे। परन्तु इन सबके मूल में नीचे के तात्त्विक सिद्धान्तों के बारे में कैसी समानता है यह अब हम देखें।

१. जीव, आत्मा अथवा चेतनतत्त्वका अस्तित्व। २. चेतनतत्त्व की सहजशुद्धि और फिर भी उस शुद्धि को आवृत करनेवाला अज्ञात एवं क्लेश का परदा। ३. अज्ञान एवं क्लेश के आवरण की आदि सर्वथा अज्ञात होने पर भी प्रयत्न से उसके निवारण की शक्यता तथा ऐसे प्रयत्नों की मानव पुरुषार्थ द्वारा साध्यता। ४. अज्ञान एवं क्लेश की निवृत्ति तथा सहभू शक्ति के प्राकट्य के परिणामस्वरूप चेतनतत्त्व की स्वरूपस्थिति।

इन चार सिद्धान्तों में से किसी भी एक सिद्धान्त के बारे में साधक को प्रतीति न हो अथवा मन्द या शिथिल प्रतीति हो तो उसकी साधना न तो आगे बढ़ सकती है, न टिक सकती है और न कोई परिणाम ही ला सकती है। कोई भी सच्चा साधक उक्त सिद्धान्तों के बारे में स्थिर और दृढ़ श्रद्धालु होगा ही और अपनी साधना से उस श्रद्धा को अनुभवसिद्ध करेगा ही। आध्यात्मिक साधना की प्रत्येक परम्परा के साहित्य में इन मौलिक चार सिद्धान्तों का हजारों वर्षों से उल्लेख मिलता है और निर्विवादरूप से ये मान्य भी हैं। यों तो साधना की छोटी बड़ी अनेक शाखाएँ हैं, पर सांख्य-योग, न्याय-वैशेषिक, बौद्ध एवं जैन इन चार परम्पराओं में उन सभी शाखाओं का समावेश हो जाता है। इससे इन चार परम्पराओं के प्राचीन एवं सर्वमान्य ग्रन्थों के आधार पर हम यह देखेंगे कि उक्त चार मौलिक सिद्धान्तों का वहाँ किस तरह निरूपण किया गया है :–

सिद्धान्तों का नामवार कोष्टक

	सांख्य-योग	न्याय-वैशेषिक	बौद्ध	जैन
१.	पुरुष के नाम से शुद्ध चेतन का स्वतंत्र अस्तित्व	आत्मा के नाम से स्वतंत्र चेतन या जीवतत्व का अस्तित्व	नाम अथवा चित्त के नाम से स्वतंत्र चेतनतत्व का अस्तित्व	जीव अथवा आत्मा के नाम से स्वतंत्र चेतन का अस्तित्व
२.	अविद्या एवं तन्मूलक अस्मिता राग, द्वेष और अभिनिवेश ये चपर्व विपर्यय रूप आवरण	मिथ्याज्ञान या मोह तथा राग द्वेष रूप में आवरण	समुदय नाम से अविद्या या तृष्णा के रूप में आवरण का अस्तित्व	मिथ्यादर्शन और राग-द्वेष, कषाय अथवा दर्शनमोह एवं चारित्र मोहरूप आस्रव या आवरण
३.	सम्यग्ज्ञान या विवेकख्याति तथा उसके उपयोगी आठ योगांग	सम्यग्ज्ञान और योगमार्ग	सम्यग्दृष्टि आदि आठ अंगवाला अष्टांगिकमार्ग	सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र रूप संवर
४.	कैवल्य और स्वरूपस्थिति	मुक्ति और निर्वाण	निर्वाण	मोक्ष

प्राचीन एवं महत्व के कहे जा सके ऐसे उपनिषदों में ब्रह्म, आत्मा, अव्यक्त एवं सत् जैसे शब्दों से शुरू होनेवाली चर्चाओं में भिन्न-भिन्न रीति से उक्त चार सिद्धान्तों का ही विवरण है। उपर्युक्त चार सिद्धान्तों का अनुकरण करके साधना करने वाले साधकों के क्षेत्रों में तथा इन सिद्धान्तों के बारे में दार्शनिक दृष्टि से मीमांसा करनेवाले विद्वानों के क्षेत्रों में इन सिद्धान्तों के आस-पास दूसरे अनेक उपसिद्धान्त एवं दृष्टिभेद अस्तित्व में आये हैं। जैसे

कि, कोई चेतनतत्त्व एक ही मानता है तो कोई अनेक, कोई उसे अपरिणामि कूटस्थनित्य मानता है तो कोई परिणामिनित्य, तो दूसरा कोई केवल सन्ततिरूप। इसी प्रकार साधना में कोई आत्मज्ञान को मोक्ष का साक्षात् अंग मानकर यम, नियम आदि योगांग अथवा चर्यामार्ग को सम्यग्ज्ञान में उपकारक समझता है[१], तो कोई चर्या अथवा चारित्र को मोक्ष का अंग मानकर सम्यग्ज्ञान को उसका सहायक मानता है[२]। ऐसे दृष्टिभेद यद्यपि अनेक हैं, पर उनका स्थान आध्यात्मिक साधना में गौण या नहीं जैसा है, क्योंकि ऐसे उपसिद्धान्त अथवा दृष्टिभेद से सच्ची साधना में कोई अन्तर नहीं पड़ता, परन्तु उपर्युक्त चार सिद्धान्तों में से किसी एक के बारे में भी यदि श्रद्धा न हो तो साधना अस्तित्व में ही नहीं आती और मूढ़भाव से अस्तित्व में आई भी हो तो वह फलावह नहीं बनती। इसीलिए प्रत्येक साधना की परम्परा में इन मूल सिद्धान्तों की चर्चा पर ही भार दिया जाता है।

चाहे अद्वैत परम्परा के साधक हों अथवा द्वैतवादी सांख्य एवं न्याय वैशेषिक परम्परा के साधक हों, उन सभी की एक सी मान्य साधना पातंजल योगशास्त्र में स्पष्ट एवं पूर्णरूप से संगृहीत है। पातंजल योगशास्त्र का रचनाकाल भले ही उत्तरवर्ती हो, पर वह पूर्ववर्ती योगसाधना के साहित्य का परिपाकरूप होने से सर्वमान्य हुआ है। इससे उसमें वर्णित योगसाधना की प्रक्रिया और उसके अंगों का निर्देश यहाँ पर्याप्त होगा। तथागत बुद्ध ने स्वयं ही पूर्ववर्ती योगी परंपरा से जुदा होकर स्वानुभव के आधार पर साधनामार्ग का विकास किया है। उनकी वह साधना पालि पिटकों में और उनके जीवनवृत्तान्त में वर्णित है, परन्तु इन सबका साररूप विशुद्धिमार्ग नामक ग्रन्थ बुद्धघोष ने रचकर उसमें उस समग्र साधना का वर्णन किया है। अतः उसी के अनुसार बौद्ध साधना की प्रक्रिया एवं उसके अंगों का निर्देश यहाँ पर्याप्त होगा। महावीर की साधना यद्यपि पूर्ववर्ती पार्श्वनाथ की साधना की अनुगामिनी है, फिर भी दीर्घतपस्वी

---

१. विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः। — योगसूत्र २.२७

२. सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः। — तत्त्वार्थसूत्र १.१

महावीर ने उसमें स्वानुभव से कुछ संशोधन एवं परिवर्द्धन भी किया है। भगवान् महावीर की यह साधना आचारांग एवं सूत्रकृतांग जैसे आगमों में इधर-उधर संगृहीत है। इन सबके सार जैसे वाचक उमास्वाति के तत्त्वार्थसूत्र में संवर एवं उसके अंगों के रूप में उस साधना का वर्णन आता है। अतः उसके आधार पर जैन-साधना का यहाँ हम निर्देश करेंगे इस प्रकार भारतीय साधनाक्रम का निर्देश हम जिन तीन ग्रन्थों के आधार पर करना चाहते हैं वे हैं : योगसूत्र, विशुद्धिमार्ग एवं तत्त्वार्थसूत्र।

पातंजल योगसूत्र में वर्णित आठ अंग ये है : यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इनमें से पाँच यम अथवा महाव्रत साधना की नींव हैं। शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वप्रणिधान ये पाँच नियम यमकी पुष्टि में उपकारक हैं। इन दो अंगोंद्वारा साधक का जीवन मैत्री एवं करुणा से समृद्ध बनता है तथा उसके चित्तगत क्लेश मन्द होने लगते हैं। आसन और प्राणायाम (योगसूत्र २.४८) इन दो अंगों से शरीर शीत, उष्म आदि द्वन्द्व सहिष्णु बनता है, जब कि प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि इन चार अंगो द्वारा इन्द्रियजय (२.५५) और मन की सूक्ष्म विचारशक्ति अथवा सत्यस्पर्शी ऋतंभरा प्रज्ञा (३.५ और १.४८) प्रकट होती है। इन अंगों को यथाशक्ति सिद्ध करने के लिए साधक योगी किस तरह बरते और क्या करे, इसकी प्रक्रिया का वर्णन करते हुए पतंजलि ने प्रथम अभ्यास और वैराग्यभाव बढ़ाने की (१.१२) और उसके बाद जप भावना तथा ध्यान करने की सूचना (१.२८, ३२, ३३, ३९) की है।

विशुद्धिमार्ग में शील, समाधि एवं प्रज्ञारूप से बौद्धसम्मत आर्य-अष्टांगिक[१] मार्ग का जो विशद व विस्तृत निरूपण किया गया है उसमें शीलरूप से पातंजल सम्मत यम एवं नियम आ जाते हैं, समाधिरूप से प्राणायाम,

---

१. सम्मादिट्ठि—सम्यग्दृष्टि, सम्मासंकप्पो—सम्यक्संकल्प, सम्मावाचा—सम्यग्वाणी, सम्माकम्मन्तो—सम्यक्कर्म, सम्माआजीवो—सम्यगाजीविका, सम्मावायामो—सम्यग्व्यायाम, सम्मासति—सम्यक्स्मृति, सम्मासमाधि—सम्यक्समाधि।

—संयुत्तनिकाय ५.१० और विभंग ३१७-२८।

प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि आ जाते हैं तथा प्रज्ञारूप से विवेकख्याति आ जाती है।

वाचक उमास्वाति ने संवर के अंगरूप से गुप्ति, समिति, धर्म, अनुपेक्षा, परीषहजय, चारित्र और तप—इन सात अंगों का (तत्त्वार्थसूत्र ९.२) वर्णन किया है। चारित्र योगसम्मत पाँच यम अथवा महाव्रत और बौद्धसम्मत शील है। ध्यान आदि अभ्यन्तर तप योगसम्मत प्रत्याहार आदि चार अंग और बौद्धसंमत समाधि है। अनशन आदि बाह्य तप योगसंमत तपरूप तीसरा नियम है और स्वाध्यायरूप अभ्यन्तर तप योगसंमत स्वाध्यायरूप चौथा नियम है।

ऊपर जो थोड़ी सूचक तुलना की है उसका हेतु यही है कि भिन्न-भिन्न परंपराओं में प्रचलित आध्यात्मिक साधना में शब्द भेद तथा वर्गीकरण का कुछ कुछ भेद होने पर भी मूलगत एकता कैसी है यह समझ में आ सके। चाहे जिस परंपरा का अवलंबन लेकर साधक साधना क्यों न करता हो, पर यदि उसकी दृष्टि सचमुच अध्यात्मिक हो तो उसे साधनाकाल में होनेवाली चित्त की अथवा आत्मा की उत्क्रान्ति का अनुभव एक सा ही होगा और ध्यान की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ भी एक सी ही अनुभव में आयेंगी। इस बात का प्रमाण उपर्युक्त तीनों परंपराओं के प्राचीन ग्रन्थों में से भी उपलब्ध होता है। उदाहरणार्थ, सांख्य योग परंपरा में चार संप्रज्ञात और पाँचवीं असंप्रज्ञात जैसी उत्क्रान्तिगामी भूमिकाएँ तथा सवितर्क, सविचार, निर्वितर्क एवं निर्विचार जैसी चार समापत्तियाँ वर्णित हैं तो बौद्ध ग्रन्थों में सोतापत्ति, सकदागामी, अनागामी और अर्हत् के नाम से चार उत्क्रान्तिगामी भूमिकाएँ तथा सवितर्क

शील— कुशल धर्म को धारण करना शील है। कर्तव्य में प्रवृत्ति और अकर्तव्य विरति यों दोनों प्रकार से शील का वर्णन किया गया है। (विशुद्धिमार्ग १.१९-२५, पृ. ५७)

समाधि— कुशल चित्त की एकाग्रता अर्थात् एक आलम्बन में चित्त और चैतसिक धर्मों का सम्यक् स्थापन समाधि है। (विशुद्धिमार्ग ३.२-३, पृ. ५७)

प्रज्ञा— कुशलचित्तयुक्त विपश्यना ज्ञान अर्थात् विवेकज्ञान प्रज्ञा है। (विशुद्धिमार्ग १४.२-३ पृ. ३०४)

प्रीतिसुख-एकाग्रता आदि चार ध्यान आते हैं।[१] जैन परंपरा में मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थान के नाम से चौदह उत्क्रान्तिगामी भूमिकाओं का[२] तथा पृथक्त्ववितर्क-सविचार, एकत्ववितर्क निर्विचार आदि चार ध्यानों का[३] वर्णन है। योगवासिष्ठ में अज्ञान की सात और ज्ञान की सात यों कुल मिलाकर चौदह उत्क्रान्तिगामी भूमिकाओं का वर्णन है।[४]

यह समग्र वर्णन तत्त्वतः समान अनुभव में से ही आया है और विकसित हुआ है। नये-नये साधक एवं व्याख्याकारों में अपनी-अपनी रुचि एवं शक्ति तथा श्रोताओं का अधिकार देखकर एक ही अनुभव का कभी संक्षेप से तो कभी विस्तार से, कभी प्राचीन भाषा में तो कभी नवीन भाषा में वर्णन किया है। इसीलिए हम देखते हैं कि पालि पिटकों में चार ध्यान का प्राचीन वर्णन था तो बाद में उसके स्थान पर पाँच ध्यान का निरूपण हुआ।[५] इसी प्रकार पहले सोतापत्ति आदि चार मार्ग और उनके चार फल इस तरह आठ भूमिकाएँ थीं तो पीछे से प्रमुदिता आदि दस भूमिकाएँ आईं[६]। इसी प्रकार जैन परम्परा में चौदह गुणस्थानों का बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा इन तीन भूमिकाओं में समावेश किया गया।[७]

क्रमशः

---

१. देखो भूमिका और ध्यान नामका ५ वाँ परिशिष्ट।

२. वही।

३. देखो तत्त्वार्थसूत्र ९.४१ से आगे तथा उनका विवेचन।

४. देख परिशिष्ट ५।

५. विशुद्धिमार्ग पृ. ११३।

६. देखो परिशिष्ट ५

७. वही, तथा पूज्यपादका समाधिशतक श्लो. ४ से आगे तथा उपा. यशोविजयजी कृत समाधिशतक (गुजराती), गुर्जर साहित्य संग्रह भा. १ पृ. ४६९ पर ७वें दोहे से।

सुवर्णभूमि में कालकाचार्य

डॉ. उमाकान्त शाह

हम आगे देखेंगे कि इस कालक का समय ई. स. पूर्व की पहली या दूसरी शताब्दी था। उस समय में भारत के सुवर्ण भूमि और दक्षिण चीन इत्यादि देशों से सम्बन्ध के थोड़े उल्लेख मिलते है मगर कालक से सुवर्णभूमिगमन वाले वृत्तान्त की महत्ता आज तक विद्वानों के सामने नहीं पेश हुई।

ग्रीक लेखक टॉलमी और पिरप्लस ऑफ द इरिथ्रीअन सी के उल्लेख से, जैन ग्रन्थ वसुदेव-हिण्डि में चारुदत्त के सुवर्णभूमिगमन के उल्लेख से, और महानिद्देश इत्यादि के उल्लेख से यह बात निश्चित हो चुकी है कि ईसा की पहली दूसरी शताब्दियों में भारत का पूर्व के प्रदेशों (जैसे कि दक्षिण-चीन, सियाम, हिन्दी चीन, बर्मा, कम्बोडिया, मलाया, जावा, सुमात्रा आदि प्रदेशों) से घनिष्ठ व्यापारी सम्बन्ध था। चारूदत्त की कथा का मूल है गुणाढ्य की अप्राप्य बृहत्कथा जिसका समय यही माना जाता है। बहुत सम्भवित है कि इससे पहले—अर्थात् ई. स. पूर्व की पहली दूसरी शताब्दी में—भी भारत का सुवर्णभूमि से सम्बन्ध शुरू हो चुका था। बैक्ट्रिया में ई. स. पूर्व १२६ आसपास पहुँचे हुये चीनी राजदूत चांग कीयेन (Chang kien) की गवाही मिली है कि दक्षिण पश्चिम चीन की बनी हुई बाँस और रूई की चीजें हिन्दी सार्थवाहों ने सारे उत्तरी भारत और अफगानिस्तान के रास्ते से ले जाकर बैक्ट्रिया में बेची थी।[१] कालकाचार्य और सागरश्रमण के सुवर्णभूमि-भूमि-गमन का वृत्तांन्त हमारे राष्ट्रीय इतिहास में और जैनधर्म के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक निर्देश हैं।

सुमात्रा के नजदीक में वंका नामक खाड़ी है। डॉ. मोतीचन्दजी ने बताया है कि महानिद्देश में उल्लिखित बंकम् या यही वंका खाड़ी का प्रदेश है।[२] हमें एक

---

१. डॉ. पी. सी. बागची, **इन्डिया ऑन्ड चाइना** (द्वितीय संस्करण, बम्बई, १९५०), पृ.५-६, १६-१७, १९-२७।

२. **कल्पना,** फरवरी, १९५२, पृ. ११८

अतीव सूचक निर्देश मिलता है जिसका महत्त्व बृहत्कल्पभाष्य के उपर्युक्त उल्लेख के सहारे से बढ़ जाता है। सबको मालूम है कि आर्य कालक निमित्तज्ञ और मन्त्रविद्या के ज्ञाता थे। आजीविकों से इन्होंने निमित्तशास्त्र-ज्योतिष का ज्ञान पाया था ऐसे पञ्चकल्पभाष्य और पञ्चकल्पचूर्णि के उल्लेख हम आगे देखेंगे। खास तौर पर दीक्षा-प्रव्रज्या देने के मुहूर्त विषय में इन्होंने आजीविकों से शिक्षा पायी थी। अब हम देखते हैं कि वराहमिहिर के बृहज्जजातक के टीकाकार उत्पलभट्ट (ई. स. ९वीं शताब्दी) ने एक जगह टीका में वंङ्कालकाचार्य के प्रव्रज्या-विषयक प्राकृतभाषा के विधान का सहारा दिया है और मूल गाथायें भी अपनी टीका में अवतारित की हैं।[१] वह विधान निम्नलिखित शब्दों में है :

एते **वंङ्कालकमताद्** व्याख्याताः। तथा च **वंङ्कालकाचार्यः**—

तावसिओ दिणणाहे चन्दे कावालिओ तहा भणिओ।
रत्तवडो भुमिसुवे सोमसुवे एअदंडीआ।।
देवगुरुसुक्ककोणे कमेण जइ-चरअ-खमणाई।

अस्यार्थः तावसिओ तापसिकः दिणणाहे दिननाथे सूर्ये चन्दे चन्द्रे कावालिओ कापालिकः तहा भणिओ तथा भणितः। रत्तवडो रक्तपटः। भुमिसुवे भूमिसुते सोमसुवे बुधे एअतंडीआ एकदण्डी। . . . कमेण क्रमेण जई यतिः चरअ करकः क्षपणकः। अत्र वृद्धश्रावकग्रहणं माहेश्वराश्रितानां प्रव्रज्यानामुपलक्षणार्थं। आजीविकग्रहणं च नारायणाश्रितानाम्। तथा च वङ्कागालके संहितान्तरे पठ्यते-

जलण-हर-सुगअ केसव सुई ब्रह्मण णग्ग मग्गेसु।
दिक्खाणं णाअव्वा सुराइग्गहा कमेण णाहगआ।।

जलण ज्वलनः इत्यर्थः। हर ईश्वरभक्तः भट्टारकः सुगअ सुगत बौद्ध इत्यर्थः. केसव केसवभक्त भागवत इत्यर्थः सूई श्रुतिमार्गगतः मीमांसकः। ब्रह्मण ब्रह्मभक्तः वानप्रस्थः णग्ग नग्न क्षपणकः। xxxx [२]

---

१. महामहोपाध्याय पां. वा. काणे, **वराहमिहिर एन्ड उत्पल,** जर्नल ऑफ द बॉम्बे ब्रान्च ऑफ द रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, १९४८-४९, पृ. २७ से आगे।

२. **बृहज्जातक** (वेंकटेश प्रेस, बम्बई, सं. १९८०) उत्पलकृत टीका सह, पृ. १५६।

वराहमिहिर ने अपने बृहजातक, १५.१ में प्रव्रज्या के विषय में जो विधान दिया है वह उत्पल भट्ट के कथन के अनुसार वंङ्कालक के मतानुसार वराहमिहिर ने दिया है। उसी बात के स्पष्टीकरण में उत्पलभट्ट वंङ्कालक की प्राकृत गाथायें उद्धत करते हैं। यहाँ वंङ्कालकाचार्य (वंङ्कालकाचार्य) ऐसा पाठ होने से इस प्राकृतविधान (गाथाएँ) के कर्ता के जैन आर्य कालक होने के बारे में विद्वानों में संदेह रहा है। महामहोपाध्याय श्री पां. वा. काणे ने यह अनुमान किया है कि वंङ्कालकाचार्य का कालकाचार्य होना सम्भवित है।[११] हम देखते हैं कि कालकाचार्य और इनके प्रशिष्य सुवर्णभूमि गये थे। सुवर्णभूमि से यहाँ वस्तुतः किस पूर्वी प्रदेश का उल्लेख है यह तो पूरा निश्चित नहीं है किन्तु, विद्वानों का खयाल है कि दक्षिण वर्मा से लेकर मलाया और सुमात्रा के अन्त तक का प्रदेश सुवर्णभूमि बोला जाता था (देखो, डॉ. मोतीचन्द्र कृत, सार्थवाह, नकशा) जिसमें 'वंकम्' या वंका की खाड़ी भी आ जाती है। पॉलेमबेंग के इस्टुअरी के सामने वंका द्वीप है। वंका का जलडमरुमध्य मलाया और जावा के बीच का साधारणपथ है। डॉ. मोतीचन्द्रजी लिखते हैं : बंका की राँगे की खदानें मशहूर थीं। संस्कृत में बँग के माने राँगा होता है और सम्भव है कि इस धातु का नाम उसके उद्‌गमस्थान पर से पड़ा हो।[१२]

उत्पल-टीका की हस्तप्रतों का पाठ—'वंङ्कालकाचार्य' और 'वंङ्कालक-संहिता' उन आचार्य का सूचक हो सकता है जो सुवर्णभूमि में गये थे और जिनके प्रशिष्य सागरश्रमण सपरिवार सुवर्णभूमि में (इस में वंका आ जाता है) रहते थे। सम्भव है ये ही आचार्य कालक के अलावा वंङ्कालक या वंङ्कालक नाम से भी पहचाने जाते हों। यह भी हो सकता है कि शुद्ध पाठ कालकाचार्य और कालक-संहिता हो किन्तु कालक के वंका-गमन की स्मृति में पाठ में अशुद्धि हो गई हो। उत्पलभट्ट का कहना है कि वराहमिहिर ने प्रव्रज्या के विषय में (बृहज्जातक, १५, १) वंङ्कालकाचार्य (कालकाचार्य) के मत का अनुसरण किया है। पञ्चकल्पभाष्य और पञ्चकल्पचूर्णि गवाही देते हैं कि कालकाचार्य ने उसी प्रव्रज्या के विषय का आजीवकों से सविशेष अध्ययन किया था। अतः उत्पल-टीका के वंङ्कालकाचार्य कालकाचार्य हैं ऐसा मानना समुचित है।

---

११. देखो, महा. पां. वा. काणे, **वराहमिहिर** एन्ड उत्पल, जर्नल ऑफ ध बॉम्बे ब्रान्च ऑफ ध आर. ए. एस. १९४८-४९ पृ. २७ से आगे,

१२. डॉ. मोतीचन्द्र, **सार्थवाह,** पृ. १३०-१३१, १३४.

ईसा की सातवीं शताब्दि आसपास रची हुई **पञ्चकल्प-चूर्णि** में लिखा है -[१३]

लोगाणुओगे, अज्जकालगा सज्झेंतवासिणा भणिया एत्तियं। सो न नाओ मुहुत्तो जत्थ पव्वाविओ थिरो होज्जा। तेण निव्वेएणं **आजीवगपास निमित्तं पढियं।** पच्छा पइट्ठाणे ठिओ **सायवाहणेण** रत्ना तिन्नि पुच्छाओ मामगा सयसहस्सेण- -एगा पसुलिंडिया को वलेइ। बिइया समुद्दे केत्तियं उदयं। प्रत्ययात्फलं पुच्छइ- -**मुहरा किच्चिरेणं पढइ न वा।** पढमाए कडगं लक्खमुल्लं। बिंइ (य-तइ) याए कुंडलाइं। आयरिएण भणियं-अलाहि मम एएण। किं पुण निमित्तस्स उवयारो एस। ाजीवगा उवट्ठिया-अम्ह एस गुरुदक्खिणाए। पच्छा तेण सुत्ते णट्ठे गंडियाणुयोगा कया। पाडलिपुत्ते संघमज्झे भणई-मए किंचि कयं तं निसामेह। तत्थ पयट्ठियं। **संगहणीओ** वि ण कप्पट्ठियाणं अप्पधाणाणं उवग्गहकराणि भवंति। **पढमाणयोगमाई** वि तेण कया।

उपर्युक्त चूर्णि का सारांश यह है कि, अपने मेघावी शिष्य प्रव्रज्या में स्थिर न रहने से, उनके सहाध्यायी ने जब आर्य कालक को यह मार्मिक वचन सुनाया कि आपने ऐसा मुहूर्त निकालना नहीं सीखा जिसमें प्रव्राजित शिष्य प्रव्रज्या में स्थिर रहे तब कालकाचार्य आजीविकों के पास गये और उनसे निमित्त शास्त्र पढ़ा। पीछे प्रतिष्ठानपुर गये जहाँ सातवाहन राजा ने उनको तीन प्रश्न पूछे और हरेक प्रश्न का ठीक उत्तर होने पर एक-एक लक्ष (सुवर्णमूल्य) देने को कहा। पहले प्रश्न का उत्तर मिलने से लक्षमूल्य अपना कटक दिया। दूसरे और तीसरे प्रश्न के उत्तर मिलने पर अपना एक एक कुंडल दिया । सातवाहन को पहले दो प्रश्न के उत्तर मिलने से जो प्रतीति हुई इससे उसने तीसरा प्रश्न यह किया कि मथुरा कब (कितने समय के बाद) पड़ेगी और पड़ेगी और पड़ेगी या नहीं? यह तीसरे प्रश्नवाली हकीकत सविशेष महत्त्व की है जिसके बारे में आगे विचार होगा।'

कटक और कुंडल को देखकर कालकाचार्य ने कहा कि उनको इन चीजों की जरूरत नहीं (उनको तो अग्राह्य थीं)। इतने में (कालकाचार्य को निमित्तिज्ञान देनेवाले) आजीविक आ पहुँचे और अलंकारों को देखकर बोले-

---

१३. श्री आत्मारामजी जैन ज्ञानमंदिर, बड़ौदा प्रवर्तक श्री कान्तिविजयजी शास्त्रसङ्ग्रह, हस्तलिखित प्रति नं. १२८४, पत्र २९ से उद्धृत।

–(हमें गुरुदक्षिणा अभी तक मिली नहीं) यही हमारी गुरुदक्षिणा होगी। पीछे कालकाचार्य ने गण्डिकानुयोग की रचना की और पाटलिपुत्र में संघ के समक्ष निवेदन किया : मैंने कुछ रचनायें की हैं, आप इनको सुनिये। सुनकर संघ ने इस रचना को मान्य किया। कालकाचार्य ने अल्पधारणाशक्तिवाले बालकों (बालकतुल्यों) के लिये संग्रहणीयाँ (संङ्ग्रहणी-गाथाये) बनाई वे उपकारक हुई। उन्होंने प्रथमानुयोग भी बनाया।

पञ्चकल्पचूर्णि का कालकपरक वृत्तान्त कुछ विस्तारपूर्वक पञ्चकल्पभाष्य में पाया जाता है। वस्तुतः संघदास गणिकृत पञ्चकल्पभाष्य पञ्चकल्पचूर्णि से प्राचीन है और ई. स. की ६वीं सदी में बना हुआ है। पञ्चकल्पभाष्य की प्रस्तुत गाथायें निम्नलिखित हैं—

मेहावीसीसम्मी, ओहातिए कालगज्ज थेराणं।
सज्झंतिएण अह सो, खिंसंतेणं इमं भणिओ।।
अतिबहुतं तेऽधीतं, ण य णातो तारिसो मुहुत्तो उ।
जत्थ थिरो होइ सेहो, निक्खंतो अहो! हु बोद्धव्वं।।
तो एव स ओमत्थं, भणिओ अह गंतु सो पतिट्ठाणं।
आजीविसगासम्मी, सिक्खति ताहे निमित्तं तु।।
अह तम्मि अहीयम्मी, वडहेट्ठ निविट्कऽन्नयकयातिं।
सालाहणो णरिंदो, पुच्छतिमा तिण्णि पुच्छाओ।।
पसुलिंडि पढमयाए, बितिय समुद्दे व केत्तियं उदयं।
ततियाए पुच्छाए, महुरा य पडेज्ज व णवत्ति।।
पढमाए व से कडगं, देइ महं सयसहस्समुल्लं तु।
बितियाए कुंडलं तू, ततियाए वि कुंडलं बितियं।।
आजीविता उवट्ठित, गुरुदक्खिण्णं तु एय अम्हं ति।
तेहिं तयं तु गहितं, इयरोचितकालकज्जं तु।।
णट्ठम्मि उ सुत्तम्मी, अत्थम्मि अण्ट्ठे ताहे सो कुण्इ।
लोगणुजोगं च तहा, पढमणुजोगं च दोऽवेए।
बहुहा णिमित्त तहियं, पढमणुओगे य होति चरियाइं।
जिण चक्कि दसाराणं, पुव्वभवाइं णिबद्धाइं।।
ते काऊणं तो सो, पाडलिपुत्ते उवट्ठितो संघं।
बेइ कतं मे किंची, अणुग्गहट्ठाए तं सुणह।।

तो संघेण णिसंतं, सोऊण य से पडिज्छतं तं तु।
तो तं पतिट्ठितं तू, णगरम्मी कुसुमणामम्मि।।
एमादीणं करणं, गहणा णिज्जूहणा पकप्पो उ।
संगहणीण य करणं, अप्पाहाराण उ पकप्पो।।[१]

पहले पञ्चकल्पचूर्णि का बताया हुआ वृत्तान्त यहाँ पर है, और यह भाष्यगत वृत्तान्त ही चूर्णि का मूल है। भाष्यगाथा में स्पष्टीकरण है कि निमित्त सीखने के लिए कालकाचार्य प्रतिष्ठान नगर को गये और वहाँ उन्होंने आजीविकों से निमित्त पढ़ा। पढ़ने के बाद किसी समय वे वट-वृक्ष के नीचे स्थित थे जहाँ 'सालाहण नरिन्द' जा पहुँचा और कालक से तीन प्रश्न पूछे। प्रश्न और गुरुदक्षिणा वाली बात दोनों ग्रन्थों में समान है किन्तु भाष्य में आगे की बातें कुछ विस्तार से हैं। भाष्यकर कहते हैं कि इस प्रसंग के बाद कालकाचार्य अपने उचितकार्य में–धर्मकार्य में धर्माचरण में–लगे। सूत्र नष्ट होने से और अर्थ अनष्ट होने से (मतलब कि सूत्र दुर्लभ हो गये थे किन्तु प्रतिपाद्य विषय का अर्थज्ञान शेष था।) इन्होंने लोकानुयोग और प्रथमानुयोग इन दोनों शास्त्रों की रचना की। लोकानुयोग में निमित्तज्ञान था, और प्रथमानुयोग में जिन, चक्रवर्ती, दशार इत्यादि के चरित्र थे। इस रचना के बाद वे पाटलिपुत्र में संघ के समक्ष उपस्थित हुए और अपनी ग्रन्थरचना सुनने की विज्ञप्ति की ग्रन्थों को सुनकर इनको संघ ने प्रमाणिक कर मान्य रखा। इन सबका करना, निर्यूहन करना इत्यादि को जैन परिभाषा में प्रकल्प कहते हैं। और संग्रहणी इत्यादि की रचना भी प्रकल्प बोली जाती है।

इस तरह हम देखते है कि आर्य कलक निमित्तशास्त्र के बड़े पण्डित थे और प्रव्रज्या के विषय में (निमित्तशास्त्र का) इन्होंने आजीविकों से सविशेष अध्ययन किया था। वे बड़े ग्रन्थकर्ता थे जिन्होंने प्रथमानुयोग, लोकानुयोग इत्यादि की रचना की। इस लोकानुयोग में निमित्तशास्त्र आता है। अतः क्योंकि प्रव्रज्या के विषय में ही वराहमिहिर वङ्कालक के मत का अनुसरण करते हैं और उसी विषय की उनकी रची हुई गाथायें उत्पलभट्ट ने उद्धत की हैं। हमें विश्वास होता है कि वङ्कालक से आर्य कालक ही उद्धिष्ट हैं। हमें

१.पञ्चकल्पभाष्य, मुनिश्री हंसविजयजी शास्त्रसंग्रह (श्री आत्मारामजी जैन ज्ञानमन्दिर, बड़ौदा), हस्तलिखित प्रति नं. १६७३, पत्र ५०.

यह भी खयाल रखना चाहिए कि उत्पलभट्ट ने अवतारित की हुई गाथायें उसी प्राकृत में हैं जिसमें जैनशास्त्र रचे गये हैं।

इस चर्चा से यह फलित होता है कि आर्य कालक, अनुयोग-कार कालक, निमित्तवेत्ता कालक ऐतिहासिक व्यक्ति थे, उनकी रचनाएं वराहमिहिर ने देखी थीं और ई. सं. की ९वीं शताब्दी में उत्पलभट्ट के सामने भी कालक की रचनायें या इनका अंश मौजूद था।

यह कालक वराहमिहिर के वृद्धसमकालीन या पूर्ववर्ती होंगे। अनुयोग के चार विभाग करने वाले आर्यरक्षित[१] से आर्य कालक पूर्ववर्ती होने चाहिए। आर्य रक्षित का समय ईसा की प्रथम शताब्दी के अन्त में माना जाता है। अतः कालकाचार्य वराहमिहिर के पूर्ववर्ती हैं। वराहमिहिर का समय शक संवत् ४२७ या ई. स. ५०५ आसपास माना गया है।[२] इस समय के आस पास कालक शकों को भारत में लाये ऐसा हो नहीं सकल, क्योंकि ईसा की पहली सदी में भारत में शक् जरूर बसे हुये थे और जगह-जगह पर उनका शासन भी था। अतः आर्य कालक वराहमिहिर के पूर्ववर्ती ही थे। हम देख चुके हैं कि अनुयोगकार निमित्तज्ञ कालक और गर्दभिल्ल-विनाशक निमित्तज्ञ कालक एंक ही हैं और वही सुवर्ण भूमि में गये थे।

डॉ. आर० सी० मजुमदार लिखते हैं : "An Annamite text gives some particulars of an Indian named Khauda-la. He was born in a Brahmana family of Western India and was well-versed in magical art. He went to Tonkin by sea, probably about the same time as Jivaka . . . He lived in caves or under trees, and was also known as Ca-la-cha-la (Kalacharya-- black preceptor ?)" [३]

इसका मतलब यह है कि अनाम-चम्पा के किसी ग्रन्थ में लिखा है कि पश्चिमी भारत की ब्राह्मणजाती का कोई **खऊद-ल** नामक व्यक्ति वहाँ दरियाई रास्ते

---

१. देविद वंदिएहिं, महाणुभावेहिं रक्खिअ अज्जेहिं।
जुगमासज्ज विहत्तो, अणुओगो ता कहो चउहा।। — आवश्यक निर्युक्ति, गाथा ७७४

२. वराहमिहिर का समय शक सं. ३२७ या ई. स. ४०५ आसपास है ऐसा एक मत के लिये देखो, **इण्डियन कल्चर**, वॉल्युम ६, पृ. १९१-२०४।

३. **एज ऑफ इम्पीरिअल युनिटि**, पृ. ६५०, इटालिक्स मेरे हैं।

टोन्किन (दक्षिण चीन) गये था। यह व्यक्ति जादू-गुह्यविद्या-मन्त्रविद्या में निपुण था। पेड़ों कि छाँय में या तो गुफाओं में वह पुरुष निवास करता था और उसको **कालचार्य** कहते थे।

डॉ. मजुमदार का कहना है कि यह कालाचार्य शायद उसी समय में अनाम और टोन्किन गये जिस समय बौद्ध साधु जीवक गया था। जीवक या मारजीवक ई. स. २९० आसपास टोन्किन में था।[१] इसी अनाम की परम्परा के विषय में डॉ. पी. सी. बागची से विशेष पृच्छा करने से इन्होंने मुझे लिखा है—

"Khaudala is not mentioned in any of the authentic Chinese sources which speak of the other three Buddhist monks Marajivaka, Sangha Varman and Kalyanaruci who were in Tonkin during the 3rd century A.D. But he is referred to for the first time (loc. cit. P. 217) in an Annamese book -- Cho Chau Phap Van Phat Bah hanh ngi lue of the 14th century: The text says "Towards the end of the reign of Ling Han (168-188 A.D.) Jivaka was travelling. Khau-da-la (Kiu-to-lo = Ksudra) arrived about the same time from Western India. He had another name Ca-la-cha-lo (Kia-lo-cho-lo=Kalacarya)."

क्रमशः

१. **वही,** पृ. ६५०. और दिखिये, Le Bouddhisme en Annam, Bulletin d'ecole Francaise d'Extreme-Orient, Vol. XXXII.

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

कुछ ही समय बीता था कि एक युवा श्रेष्ठिपुत्र अपने चंद साथियों के साथ पर्वत पर आया। पाषाणखंड पर रेती की जिनप्रतिमा के समक्ष ध्यान मग्न नवयुवा रूपसुन्दरी को अकेली देख उसे एक बार तो अपनी आँख पर भी विश्वास न हुआ। किन्तु हकीकत को झुठलाया भी नहीं जा सकता। उसने साथियों को धीरे से कहा देखो! बड़ी अजीब बात है! यहाँ इस वीराने में अकेली कोई बैठी है। देवी या यक्षिणी या फिर कुछ . . . जंजाल। यहाँ तो आदमी की छाया भी मिलना मुश्किल है। वे सभी सावधानीपूर्वक आगे बढ़े तो देखा कि कोई बहुमूल्य वस्त्र अलंकार पहने राजकुमारी जैसी युवती परमात्मा के ध्यान में सब कुछ भूल कर तन्मय हो गयी है। रो रोकर उसकी पलकें सूज गयी हैं और गालों पर आंसुओं के प्रवाह सूख गये हैं। इधर-उधर आसपास कोई दिखा नहीं। सारे विकल्प छोड़कर सबने भगवान जिनेन्द्र देव की स्तुति प्रारंभ की।

हे प्रभु! यहाँ आपके दर्शनों की कोई उम्मीद न थी वहाँ भी आपने हमें दर्शन देने का अनुग्रह किया। आपकी कृपा का कोई पार ही नहीं है। हमारा तो सफर ही सफल हो गया। हमारा भ्रमण भी यात्रा बन गयी। यह सब आपकी ही गरिमा और महिमा है। धन्य हो प्रभु! आपकी जय हो, जय हो और इस ध्वनि से शियलवती का ध्यान टूटा उसने आँखें खोली। वस्त्र-जेवर से सुसज्ज युवा व्यापारी अपने साथियों सहित प्रभु की स्तुति-स्तवन कर रहा था। वह घबड़ाई, संकोच पायी।

जवान व्यापारी ने कहा 'बहन!'

कितना महान् प्यारा और पवित्र संबोधन। जहाँ सब संदेह चूर हो जाते हैं और वात्सल्य झलकने लगता है।

कितना ऊँचा और भव्य है रिश्ता! भाई और बहन का। बहुत बड़ी बहन को एक छोटा सा भाई साथ होने पर भी कितना आश्वासन रहता है। उसकी दहशत तो निकल गयी। किन्तु वह विचार में पड़ी कि अभी तक वे दोनों विजयकुमार में से कोई एक भी क्यों नहीं आया? क्या मुझे यहाँ पटकने की ही कोई इन्द्रजाल थी? इत्यादि संकल्प विकल्प में पड़ी थी कि युवा सेठ ने कहा।

'बहन! तुम कोई श्रावककुल में जन्मी भगवान् अरिहंत की उपासिका ज्ञात होती हो। मैं भी सहधर्मी के नाते तुम्हारा भाई ही हूँ। सारी चिंता छोड़कर कहो कि तुम इस दुर्गम-विषम स्थान में कैसे आयी? कहाँ से आयी? तुम कौन हो और कहाँ की रहने वाली हो? जरा भी चिंता या क्षोभ छोड़कर मुझे कहो।'

किन्तु शियलवती कुछ ना बोली। गहरे चिंतन में उसे पड़ी देख सेठ ने कहा।

'देखो! आखिर तुम कुछ कहोगी तो ही हम समझ पाएँगे। तुमने रो, रोकर आँसू भी खत्म कर दिये हैं। पलकें सूज गयी हैं। सारे प्राण में व्यथा भरी है। पूरा शरीर थकान, डर और चिंता से क्षुब्ध मालूम होता है। तुम्हारे लिबास और जेवर आदि से तुम बड़े घराने की शायद कोई महाराजा की बेटी दिखाई पड़ती हो। संकट तो सभी पर आते-जाते हैं। उसमें टूटना नहीं ; भविष्य के लिए अपने मन को सम्हालना और तैयार करना चाहिए। तुम अपनी तकलीफ कहो तो हर कोशिश हम उसका उपाय करें।'

यह सुनकर शियलवती को हिम्मत मिला। मुश्किल से वह बोल सकी 'भैया! भगवान जिनेन्द्र देव के उपासक होने के नाते आप जानते ही होंगे कि जो जैसा है वह अपने स्वयं के कारण ही है। मुझे तकलीफ है भी तो मेरी ही वजह से है। सही तो यह है कि मनुष्य जब तक आत्मा में नहीं पहुँचता तब तक वह दुःख और परेशानी ही पाता रहता है। बाहर की तलाश हकीकत में दुःख की ही तलाश है – जो हम अबोध जीव बार-बार मार खाकर भी नहीं समझ पाते। यही हमारी पीड़ा है।'

'हाँ, बात तो सही है। फिर भी अपने दुःख का कुछ निमित्त हो होगा ही। तुम कौन हो? यहाँ कैसे आयीं? तुम्हें अब कहाँ जाना हैं?'

'भाई! संसार में दुःख के निमित्त कहाँ खोजने पड़ते हैं? हर घर में' ढेर लगे हैं। मेरा दुःख आपको कहने से कोई फायदा भी नहीं।

'कोई हर्जा नहीं। जैसी तुम्हारी मर्जी। हिम्मत रखो। अभी तुम्हारा दुःख ताजा है। और तुम कहना नहीं चाहती तो मेरा जोर भी नहीं है। शाम होने को है। यहां से चल देना चाहिये। मुझे लगता है कि किसी ने तुम्हारा हरण किया है। मैं तुम्हें अपना परिचय दे दूँ।'

'मैं सिंहलद्वीप के नगरसेठ चन्द्रश्रेष्ठी का पुत्र सोमचन्द्र हूँ। व्यापार हेतु द्वीपांतर गया था। वापस लौटा हूँ और घर सिंहलद्वीप जा रहा हूँ। समुद्रयात्रा के दौरान यह पर्वत देखा, यहाँ लोगों को टहलने की इच्छा हुई और यहाँ आ पहुँचे। बड़ा टेढ़ा और बीहड रास्ता है इसका। विचार आता है कि यहाँ तुम्हारा क्या होता? सही तो यह है कि अरिहंत वीतराग प्रभु की सच्चे हृदय से की हुई भक्ति तुरंत फलती है। वह भक्ति ही हमें यहाँ ले आई तुम्हारे पास, नहीं तो ढलते दिन यहाँ आने की हमें इच्छा ही नहीं होती। अब तुम सारी चिंता और विचार छोड़ हमारे साथ चलो। पृथ्वी पर जाने के बाद सारे रास्ते अपने आप होते हैं। तुम्हें जहाँ जाना होगा वहाँ जाना आसान होगा। तुम चाहोगी वहाँ पहुंचा देंगे।'

'सही कहा भाई! जहाँ तक परमेष्ठी को भावपूर्वक नमस्कार नहीं किया वहाँ तक ही सारी विपत्तियाँ हैं। वियोगियों को आश्वासन, संकटग्रस्त को सहाय और शरणागत को सुरक्षा देने वाले सत्पुरुषों से ही यह धरती रत्नगर्भा कहलाई है।'

'हाँ बहन! सारा धर्म का ही प्रताप है। तुम हमारे साथ सिंहलद्वीप चलो सब! कुछ अच्छा होगा।'

शियलवती सहमत हुई। सभी पहाड़ से उतर जहाज में बैठे। कुछ ही दिनों में सोमचन्द्र सेठ यहाँ आये। घर पर पिताजी को सारी बात कही। चन्द्रश्रेष्ठी जी ने 'तेरी बहन हमारी ही बेटी होती है कहकर पुत्री का गौरव उसे दिया।' राजाजी! रानीजी! वह जयवर्मा राजा की बेटी शियलवती मैं ही हूँ, जिसे आप सब सुन्दरी के नाम से जानते हैं।

एक बार अपने स्थान से उतर जाने के बाद नारी की बड़ी दुर्दशा होती है। उसकी शराफत, खानदानी, गुण और ज्ञान आदि में बड़ा फर्क लोग देखते हैं। देखिये ना महाराजा! घर का सुख और कुटुम्ब भी मुझसे बिछुड़ गया। पराये घर में बस रही हूँ। मेरे भविष्य की कोई रूपरेखा साफ नजर नहीं आ

रही है। यह जो दुर्घटना घटी है वो भुलाये से भी नहीं भुलाई जाती, सदा ही इसका रंज तो लगा रहता ही है। देवदुर्लभ मेरी मंहगी जिन्दगी के दिन मैं इस तरह आपके यहाँ बिता रही हूँ। रानीजी! जब आप हम पहली दफा मिले तब मेरा जीवन जानने की आपने काफी कोशिश की लेकिन मुझे वाजिब न लगने से कुछ मैंने कहा नहीं। अब वक्त आ गया समझिये, सब अपने आप कह दिया। जिससे समझ सकें कि विषय की अभिलाषा न हो तो कहीं से कोई विपत्ति-दुःख क्लेश आ ही नहीं सकते। उस विजयकुमार के स्पर्श से मैंने अपने आपको बचा लिया होता तो कोई दुःख ना था। मैं इन सब बातों को बड़ी गहराई से जानती हूँ, समझती हूँ। मैं सुदर्शना को विषयों के सुख की बात या सिफारिश कैसे करूँ? सारी कामनाएँ भ्रांत और झूठी है, उससे कभी तृप्ति हो नहीं सकती। ये तो सोये हुओं का सपना है। सपने में सोने पहाड़ या हीरों की खान पाकर खुश हो जाओ पर हाथ में तो कुछ आता नहीं। वैसे हम यहाँ कितना ही पा लें आत्मा तक कुछ पहुँचता ही नहीं।

फिर सुदर्शना खुद समझदार है। पूर्व भव का जातिस्मरण ज्ञान हुआ है इसे। रानीजी! आप ही बताइये मैं क्या समझाऊँ।

सुंदरी की अपनी आत्मकथा सुनकर सभी की आँखे गीली हो गई। सारी सभा गंभीर हो सुंदरी को मान-सम्मान श्रद्धा भाव से देखने लगी।

सुदर्शना बोली मौसी! बड़ी अद्‌भुत और काम की बात बताई आपने। अजीब है कि संसार के प्रगट स्वरूप को, साफ और खुले चित्र को भी लोग नहीं देख पा रहे हैं। बड़ा अचरज, बड़ा अचम्भा !!

राजा बोले। अरे! शियलवती! तुम्हारे पिताजी आयोधन नगरी के राजा जयवर्मा तो हमारे परम स्नेही हैं। इस घर को तुम अभी भी पराया गिन रही हो। हमें उस बात का पता काश पहले ही लग जाता तो कितना अच्छा होता? तुम कितनी गंभीर, सहिष्णु और समझदार हो! सच ही तुम्हारे गुणों का कोई हिसाब नहीं, कोई जबाव भी नहीं ।

तुम्हारा आत्मज्ञान भी बड़ा गहरा है। विषयों की अभिलाषा से छुटना मामूली बात नहीं है। फिर हम तो बड़े कमजोर लोग हैं इस बात में बड़ी ताकत लगानी पड़ती है ये सबको जीतने में। खेल नहीं है जी तो बहुत चाहता है कि

अच्छाइयों - ऊंचाइयों को छूने पकड़ने को। मगर इसके लिए कितना उठना चाहिए? जो हरएक के बस की बात नहीं है। फिर ये मासूम-भोली सुदर्शना! खैर ये बातें फिर करेंगे सुन्दरी! ओर सुन्दरी नहीं शियलवती! हम शीघ्र ही तुम्हारे लिए व्यवस्था करते हैं। महाराजा जयवर्माजी को भी खबर पहुँचाते हैं।

पिताजी! पहले मेरी व्यवस्था कीजिये ना! अच्छा मौसी के साथ मुझे भृगुकच्छ भेज दीजिये।

'अरे बेटी! क्यों जिद करती हो, कुछ हमारा ख्याल तो करो।'

ऋषभदत्त सेठ बोले 'विचित्र है विधि का विधास।'

राजा बोले 'अजी फिर क्या बात है! बड़े गहरे विचारों में खो गये मालूम पड़ते हैं आप।'

'देखिये ना! यह शियलवती तो हमारी भानजी होती है भानजी!'

'आपकी! और यह भानजी। गजब की बात है। सो कैसे?'

बात यह है कि भृगुकच्छ के महाराजा जितशुत्र की बहन पद्मावती की यह बेटी है। तो हमारे राजा की भानजी हुई, सो हमारी भी भानजी हुई ना?

'वाह! बहुत बढ़िया। लाजवाब बात कही सेठजी! लेकिन आप लोगों ने राजकुमारी की कोई खोज-तलाश की होगी? वो कौन थे विजयकुमार? कुछ समाचार मिले होंगे?'

'हाँ जी! कोई कसर नहीं छोड़ी राजा जयवर्मा और जितशत्रु ने शियलवती को खोजने में। मानों सारी धरती देखी और क्या-क्या उपाय नहीं किये? परन्तु कहीं भी पता न चला। नकली विजयकुमार को जीतकर वापस लौटे विजयकुमार ने भी अपनी सारी चतुराई और विद्याएँ काम में ली मगर इसके तो कोई समाचार नहीं मिले। यह तो यहाँ है किसको पता चले?'

राजा बोले सेठजी! आप सब आपस में सगे हो गये, अकेले रह गये तो हम!

'मतलब?'

मतलब यह है कि शियलवती आपकी भानजी, रानी की बहन और सुदर्शना की मौसी। यों आप सभी आपस में सम्बन्धी हुए। एक दूसरे की बातों को

आपस में यों टरका देते रहेंगे। लेकिन हमारा कौन? हम तो अकेले रह गये। राजा ने यों कहकर सब को हंसाया और सभा के वातावरण को हलका बनाया।

सेठ बोले राजा! धर्म ही मजबूत और भरोसे के योग्य वस्तु है। सारी अच्छाईयों की जड़ मात्र धर्म है। हमेशा धर्म के सहयोगी और अनुकूल बनना चाहिए।

'हाँ सेठजी! धर्म तो महान है ही। उसका प्रताप और निष्कर्ष भी उत्तम और उमदा है। किंतु आप लोग जो धर्म की बात कर रहे हो वह तो हम कतई जानते नहीं है और जिस जिनेश्वर भगवान की बात करते हो उनके बारे में भी हमें कुछ पता नहीं है। तो आखिर यह तो बतलाओ कि यह धर्म है क्या?'

योगानुयोग एक धर्मयश नामक विद्याचरण (विद्या के बल से आकाश में गमन करने वाले) मुनि आकाश मार्ग से श्री नन्दीश्वर द्वीप तीर्थ की यात्रा को सिंहल के राजमहल के उपर से जा रहे थे। अपने अवधिज्ञान के बल से राजा को धर्म का जिज्ञासु और अर्थी जान वे राजसभा में उतर आये।

क्योंकि महान जिनमन्दिर बनवाना, प्रभुजी की महान पूजाएँ या अद्भुत अंगिया रचाना। अमूल्य वस्तुओं का ज्ञान देना-दया करनी, अरे! घोर तपस्या या तीर्थ यात्रा करनी आदि सब सुकृत्यों से अधिक फलदायी धर्मोपदेश देना है। धर्मदान सर्वश्रेष्ठ दान है।

धर्म उपदेश सुनकर ही जीव तत्त्व को पाता है। बुराई अच्छाई पहचानता है। उसी से जीव में परिवर्तन आता है। शुभ और शुद्ध आचरण बन पाते हैं। जीव पाप छोड़ता है और जनम-जर्नम सुखी होता है। अन्त में आत्यंतिक कर्मों का अभाव होने पर सारी विडंबनाओं से सदा के लिए छूट जाता है।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1. Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:

Vol - 1	(satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
Vol - 2	(satakas 3- 6)		150.00
Vol - 3	(satakas 7- 8)		150.00
Vol - 4	(satakas 9- 11)		150.00

2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates — Price : Rs. 100.00
   (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. — Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, — Price : Rs. 15.00
5. Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani — Price : Rs. 15.00
6. Ganesh Lalwani - Jainthology — Price : Rs. 100.00
7. Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains — Price : Rs. 100.00
8. Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India — Price : Rs. 100.00
9. Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism — Price : Rs.
10. Smt. Lata Bothra- The Harmony Within — Price : Rs. 100.00
11. Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira — Price : Rs. 100.00

Hindi :

1. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 40.00
2. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 20.00
3. Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 30.00
4. Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani — Price : Rs. 50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2230-8105/2139,

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2454-5650

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029,
Ph: (S) 2464-1186, (R) 2475-3133

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2230 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-8181-4/8780 (R) 2249-1243

SUVGYA BOYED
340, Mill Road, Apt. # 1407
Etobicolse, onterio m9 Cly8
416-622-5583

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2230-2074/8958 (D) 2230-3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2257-1697/7059 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2287-6516
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2287-9277, 2287-2826
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2237-6255

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230-0871/9372, 3022937172
(M) 9330926774

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 3288-8088/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2210-3253
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Dusaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869, Mobil : 9830101709t, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - 700 00
Phone : 3258-2284/9831030188

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamond
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes

INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES

40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.

Freight & Chartering Brokers

12-B, N. S. Road; Kolkata - 1

PH : 2230 5059 / 2230 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-

STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS

13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

SHIV KUMAR JAIN

"Mineral House"

27A, Camac Street, Kolkata - 700 016

Ph: (Off) 2287-7880, 2287-8663, Res) 2287-8128, 2287-9546

MAHENDRA TATER

Block No. 2, 3rd Floor,

45/4A, Chakraberia Road (S)

Kolkata - 700 025

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.

Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)

2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001

Ph: 2230-7162, 2231-5540, Fax : (91)(33)2220 6400

e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

WITH BEST WISHES
जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है वह एक को जानता है।

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2230 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230 3142 (O) 2475 0995,
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

BIKASH CHHAJER
Director
SITAL GROUP OF COMPANIES
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001
Phone : 2242-9265, 2210-9228, Fax : (033) 2242-9265
Mobile : 98310 22577, E-mail : finncon@vsnl.net

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone:
2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread.)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016

Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

BC JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXX. No. 7
25th October 06

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 071/2004-06
R.N.I. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225